ग़ज़ल

आया तो कभी आया, दो पल को ख्वाब बनकर।
करता रहा हुकूमत, दिल पर नवाब बनकर।।

जब भी कभी घेरा मुझे अन्धियारे ने आकर।
चमका मेरी छत पे वो तुरत माहताब बनकर।।

दीदार का मौका कभी आया जो मेरे हक़ में।
दीवार हमेशा मिली रूख पर नक़ाब बनकर।।

बंदिश कभी दुनियाँ की न हो पाई कामयाब।
महका मेरा फ़साना हर शू गुलाब बनकर।।

हम पी न सके 'ग़ैर' उसके हुस्न के मय को।
छलका मेरे कमरे में वो, हर शब शराब बनकर।।